केन्द्रीय जेल उज्जैन

8.3.2006 की सुबह 9 से 10.30 केन्द्रीय जेल उज्जैन में सत्संग का आयोजन था। साधाक बाबू लाल द्वारा महाराज श्री की आरती उतारी गई जो देखने योग्य थी। उन्होंने आरती का शुभारम्भ चरणधूली से किया पहले चरणों की आरती व चरणों पर तिलक लगा कर प्रणाम किया। महाराज श्री ने उसे प्रेम से गले लगाया व फिर स्टेज पर विराजमान हुए।श्री महाराज जी ने उन्हें सुप्रिन्टेंडैंट श्री गांधी को भी तिलक लगाने को कहा। सभी उपस्थित लोग सारे दृश्य को देख धन्य अति धन्य हो गये।

पूरा रास्ता सफेद चादरों से सुसज्जित था, जो स्वयं कैदियों ने बुनी थी और उस पर बॅलाक प्रींटिंग थी।

जेल में एक जेल अफसर का भजन व कैदी बाबूलाल न सुस्वागतम पर कुछ पंक्तियां सुनाई। फिर भजन और उसके बाद प्रवचन हुआ, महाराज जी का रुप देखने योग्य, आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी थी, वैसा ही हाल कैदियों का था, जिन के नेत्रों से आंसुओं की धारा बह रही थी। श्री महाराज जी ने डाकू योगीदास की कथा सुनाई जो एक चरित्रवान व्यक्ति था, जिस के कारण आसपास के गांवों की महिलायें भी उस का नाम लेकर निर्भय फिरती थीं।

प्रवचन के बाद श्री महाराज जी जेल के रसोई घर में गये, वहां कैदियों द्वारा बनी चपाती व दाल इत्यादि ग्रहण की। कैदी ही आटा गूंधते, चपाती व सब्जियां आदि बना रहे थे। उसके बाद महाराज जी जेल की गौशाला में गये। वहां पर नज़ारा अति प्यारा था- महाराज जी ने गौ माता को रोटी खिलाई और गौ माता प्रेम से जीभ निकाल कर प्रेम से निहारती हुई, प्रेम बरसा रही थी। अति सुन्दर दृश्य।

उसके बाद महाराज जी गये दीक्षा कक्ष में जहां कैदी साधक दीक्षा ग्रहण करने के लिए इन्तज़ार कर रहे थे। 151 साधकों ने राम नाम की दीक्षा ग्रहण की।उसके बाद पक्यिों में खड़े कैदियों से मिले जो अश्रुपूर्ण नेत्रों से अपने गुरुदेव की प्रतीक्षा में साल भर से आंखे बिछाये थे। जो समय समय पर पत्र व्यवहार द्वारा गुरुदेव से प्रेरणा व कृपा प्राप्त करते हैं।

सबसे अधिक प्रिय दृश्य था, जब श्री महाराज जी जेल से बाहर निकले और महिला कारागार को देखकर कहा क्या कांता(एक महिला कैदी) को मिल सकता हूं। कांता जी सत्संग में शामिल नहीं हो सकीं क्योंकि किसी कारण वश उसको व अन्य

महिला कैदियों को किसी जरुरी काम से रोका हुआ था मगर कांता सभी साधकों से अन्दर ही अन्दर कह रहीं थी कि देखना पूज्य श्री महाराज जी हमें दर्शन अवश्य देंगे। जैसे ही महाराज महिला कारागार में पहुंचे- महिला कैदियों की आंखों में खुशी से आंसू आ गये। वहां पहुंच कर श्री महाराज जी ने कहा ''कांता मैं तो तेरे दर्शन करने के लिए ही यहां आया था।'' बस इतना कह कर विदा ली।

सब कैदियों से कहा मेरे गले लग जाओ और सारे कैदी महाराज श्री से लिपट गये। बाहें पसार श्री महाराज ने सब को अपने अंक में समेट लिया। उसके बाद सभी ने राम राम करते हुए अश्रुपूर्ण आंखों से अपने प्रियतम गुरुदेव को विदा किया।

उसके बाद खुला सत्संग महाकाल मंदिर में आयोजित था। भव्य प्रबन्ध किया गया था श्री परमार द्वारा। ऐसे गुप्त साधक कि संचालक नाम सुनने को भी तैयार न हो। सरल सीधे साधक। सत्संग का समय था 2.30 से 4.30 और 776 साधकों ने नाम दीक्षा ली। 85000 रुपयों की ग्रन्थों की बिक्री हुई। दोपहर का समय था, खूब गर्मी थी, पंखे लगे थे पर फिर भी हाथ के पंखों द्वारा गर्मी से बचा जा रहा था। ज्यों ही 2.20 पर श्री महाराज जी पधारे, वैसे ही एक बदली सी आई और सारी ओर फैल गई और ठंडी हवा चलने लगी। यह नज़ारा सबने देखा, फिर श्री अमृतवाणी पाठ, प्रवचन व नाम दीक्षा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

विशेष बातें उज्जैन की -

1. ऐसा कोई कैदी नहीं जो रोज़ एक लाख से कम जाप करता हो।

2. वहां के सुप्रिन्टेडैंट साहिब श्री गांधी से सुनने को मिला कि कैदी बाबू लाल, प्राय चार घंटे से भी अधिक समाधि में ही बिताता है, इसके इलावा उनके जेल के समय जेल का काम करना होता है। समाधि उस समय लगाते हैं, जब उनका सोने का या आराम का समय होता है। बाबू लाल का चेहरा देखने योग्य है। जेल में रह कर ही राम कृपा से योगाभ्यास में निपुण बन गये हैं, और इंटर स्टेट कंपीटीशन में पहला इनाम प्राप्त किया है। जिससे सुप्रिन्टेडैंट साहिब काफी प्रभावित हुए।

3. रसोई में देखने को मिला कि कैदी खाना बनाते व सब्जी काटते, बनाते इत्यादि कामों को राम राम जपते हुए करते पाये जाते हैं।

4. किसी कैदी साधक के पिता अपने पुत्र को जेल में मिलने आये, तो उस का

आचार व्यवहार इतना बदला व राम नाम जपने वाला होने के कारण अति प्रसन्न हुए, उन्होंने यहां तक कहा कि मेरे दो बेटे जो घर में हैं वह भी अगर यहां आ जायें, तो अच्छे बन जायें।

5. बाबू लाल की बहन का पत्र आया जो अपने भाई के जीवन को परिवर्तित देख अति प्रसन्न है, उसने लिखा कि उस का मन भी है कि वह भी जेल में महिला विंग में आ कर रहे।

6. एक कैदी साधक जिसे पैरोल पर जाने की छुट्टी मिली थी उसने इन दिनों पैरोल पर जाने से इन्कार कर दिया 'क्यों कि उसके गुरुदेव आ रहे थे जिनकी राह में वह साल भर से आंखें बिछाये है और इतनी तैयारियां कर रहा है।

7. भोपाल जेल में श्री महाराज ने एक कैदी कुलदीप व तुलसी को ग्रंथ पहुंचाने के लिए कहा। जब वहां पहुंचे तो वहां के जेल सुप्रिन्टेंडैंट साहिब ने कहा कि मैंने तो सोचा था कि आप श्री महाराज जी का सत्संग फिक्स करने आये हैं। हमारी प्रार्थना करें कि यहां के लिए भी सत्संग की तारिख दें। यदि आप उचित समझें तो में स्वयं जाकर उन से प्रार्थना करुं। भोपाल जेल 160 एकड़ में बनी हुई हैं वहां रह कर कैदी MBA भी कर रहे हैं। ISO Award Jail है साफ सुथरी Computerise video conference system available है। सुप्रिन्टेंडैंट साहिब ने श्री राम शरणम व श्री महाराज जी के बारे में सुना हुआ था, उनकी बड़ी इच्छा थी कि हमारे यहां भी सत्संग हो।